Toppersnotes®
Unleash the topper in you

छत्तीसगढ़

सहायक शिक्षक

छत्तीसगढ़ कर्मचारी चयन मण्डल, रायपुर (CGSSB)

भाग - 4

सामान्य ज्ञान एवं पर्यावरण अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	हमारा परिवार, हमारे मित्र	1
2	प्राकृतिक संसाधन	15
3	पर्यावरणीय मुद्दे	30
4	पर्यावरण शिक्षण शास्त्र	68
5	संकल्पना प्रस्तुतीकरण के उपागम	73
6	सतत् एवं समग्र मूल्यांकन	79
7	पर्यावरण अध्ययन में शिक्षण–सहायक सामग्री	81
8	भारतीय संविधान की विशेषताएँ	86
9	प्रस्तावना	91
10	मूल अधिकार	93
11	नीति निदेशक सिद्धांत	98
12	मौलिक कर्तव्य	100
13	राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति	101
14	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद	107
15	संसद	109
16	न्यायपालिका	116
17	स्वतंत्र भारत की चुनौतियाँ	124
18	लोकतंत्र	128
19	सिन्धु घाटी सभ्यता	130
20	वैदिक युग	134
21	बौद्ध धर्म और जैन धर्म	138
22	महाजनपद एवं मगध साम्राज्य	142
23	मौर्य साम्राज्य	145

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	गुप्त काल और गुप्तोतर काल	148
25	अरब आक्रमण एवं दिल्ली सल्तनत	152
26	मुग़ल साम्राज्य	157
27	विजयनगर और बहमनी साम्राज्य	163
28	मराठा साम्राज्य	166
29	भक्ति और सूफ़ी आंदोलन	168
30	भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन	173
31	1857 का विद्रोह एवं उसके परिणाम	174
32	ब्रिटिश भारत के विरुद्ध जन आंदोलन	177
33	सामाजिक–धार्मिक आंदोलन	179
34	राष्ट्रवाद का उदय और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना	183
35	राष्ट्रीय आंदोलन (1905–1919)	186
36	गांधी युग और राष्ट्रीय आंदोलन (1919–1940)	189
37	स्वतंत्रता की ओर (1940 – 1947)	196
38	विश्व का भूगोल	199
39	भारत की भौगोलिक स्थिति	219
40	भारत की संरचना और भू–आकृति	223
41	अपवाह तंत्र	236
42	जलवायु एवं भारतीय मानसून	245
43	भारत में खनिज	250
44	भारत में उद्योग	252
45	भारत में परिवहन	256
46	जनगणना	261

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
47	प्राकृतिक वनस्पति	264
48	वन्यजीव संरक्षण	267
49	अर्थशास्त्र	275

1 CHAPTER हमारा परिवार, हमारे मित्र

परिवार

- पुरापाषाण काल में मानव अकेला रहता था धीरे - धीरे समय के साथ वो समूहों में आया और फिर ग्रामीण जीवन में जिसे आज समाज के रूप में जाना जाता है और परिवार इसी समाज की सबसे छोटी आधारभूत इकाई है। सुखी और शांतिपूर्ण परिवारों से ही समाज खुशहाल बनता है। परिवार में आमतौर पर पति-पत्नी होते हैं, जिनसे परिवार बढ़ता है।
- परिवार में तीन-चार पीढ़ियों के लोग भी शामिल हो सकते हैं।
- परिवार बच्चों की प्राथमिक पाठशाला होता है, जहाँ वे अच्छी और बुरी आदतें सीखते हैं। यहीं से उनमें धार्मिक आस्था, रहन-सहन, खान-पान, पसंद-नापसंद आदि संबंधी रुचियाँ विकसित होती हैं।
- पुश्तैनी धंधों का विकास भी परिवार से ही होता है।

- **गुरदास राय (Gurdas Rai) के अनुसार:**"परिवार वह सामाजिक इकाई है जिसमें पति-पत्नी और उनके बच्चे एक साथ रहते हैं और पारस्परिक कर्तव्य निभाते हैं।"
- **कर्नर (Corner) के अनुसार:**"परिवार वह समूह है जो विवाह और जन्म के माध्यम से जुड़ा होता है और सामाजिक व आर्थिक सहयोग प्रदान करता है।"
- **सामाजिक दृष्टि से:** परिवार वह संस्था है जो व्यक्ति को जन्म, पालन-पोषण, सुरक्षा, सामाजिक शिक्षा और सांस्कृतिक विरासत प्रदान करता है।
- **मैकाइवर एवं पेज के अनुसार,** " परिवार पर्याप्त निश्चित यौन संबंध द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह हैं जो बच्चो के प्रजनन एवम् पालन पोषण की व्यवस्था करता हैं "
- **लूसी मेयर के अनुसार,**" परिवार एक गृहस्थ समूह हैं, जिसमे माता पिता और उनकी संतान साथ साथ रहते हैं "
- **मैक्समूलर के कथनानुसार,**" परिवार भारत की आदि परंपरा हैं "

परिवार के लक्षण

- परिवार एक मूलभूत, निश्चित और स्थायी समूह है।
- यह पति-पत्नी के स्थायी साथ से बनता है, जो संतान उत्पन्न करते हैं।
- परिवार में केवल पति-पत्नी या पिता-और-बच्चे या माँ-और-बच्चे भी हो सकते हैं।
- परिवार का आकार सामान्यतः अन्य सामाजिक समूहों की तुलना में छोटा होता है।
- कुछ परिवार बड़े आकार के भी हो सकते हैं, जिनमें कई पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं।

परिवार की विशेषताएँ :

- वैवाहिक अनिवार्यता
- सामाजिक सुरक्षा
- परिवार के सदस्यों का उत्तरदायित्व
- भावात्मक आधार
- सार्वभौमिकता
- रचनात्मक प्रभाव
- सीमित आकर
- परिवार एक स्थायी और अस्थायी संस्था हैं ।

परिवार के प्रकार-

1. **निवास के आधार पर**

- **पितृकुल परिवार :**विवाह के बाद पत्नी पति के घर में रहती है। यह परिवार पितृसत्तात्मक (Patriarchal) और पितृवंशीय (Patrilineal) होता है।
- **मातृकुल परिवार :**विवाह के बाद पति पत्नी के घर में रहता है। यह परिवार मातृसत्तात्मक (Matriarchal) और मातृवंशीय (Matrilineal) होता है।
- **द्विवासीय परिवार :** विवाह के बाद दंपत्ति वैकल्पिक रूप से दोनों पक्षों के घरों में निवास करते हैं।
- **नववासीय परिवार :** विवाह के बाद नवविवाहित जोड़ा माता-पिता से अलग नए स्थान पर अपनी अलग गृहस्थी स्थापित करता है।

Toppers Notes Unleash the topper in you

2. **आकार और संरचना के आधार पर**

सामान्यत: परिवार दो तरह के होते हैं- संयुक्त परिवार और एकल परिवार।

- **संयुक्त परिवार** - जब कई पीढ़ी के लोग एक साथ रहते हैं, तो उसे संयुक्त परिवार कहते हैं। जैसे - दादा - दादी , माता - पिता, चाचा - चाची , ताऊ - ताई , बुआ , बच्चे आदि | आज भी बहुत से लोग संयुक्त परिवार में रहते हैं। संयुक्त परिवार का मुखिया दादा जी या परिवार के सबसे बड़े बुजुर्ग होते है |
- **एकल परिवार -** एकल परिवार में पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे रहते हैं। एकल परिवार में माता - पिता और बच्चे होते है | परिवार के मुखिया पुरुष (पिता जी) होते हैं । यह परिवार का सबसे छोटा एवं मूलभूत सामाजिक इकाई होता है।
- **आदर्श स्वरूप:**
  - ✓ परिवार में पिता, माँ और उनके बच्चे होते हैं।
  - ✓ सदस्य संख्या कम होती है।
  - ✓ आमतौर पर परिवार का आकार छोटा होता है।
  - ✓ सदस्यों के बीच व्यक्तिगत स्वतंत्रता अधिक होती है।
  - ✓ पारिवारिक निर्णय लेने में सदस्य स्वतन्त्र होते हैं।
  - ✓ रोजगार, शिक्षा और सामाजिक गतिविधियों में स्वतंत्रता होती है।
  - ✓ आवास अक्सर एक घर या फ्लैट में होता है।
  - ✓ बच्चों की परवरिश और देखभाल में माता-पिता की भूमिका प्रमुख होती है।

3. **अधिकार के आधार पर**

- **पितृसत्तात्मक परिवार :**परिवार की सत्ता सबसे बड़े पुरुष सदस्य के हाथ में होती है, जो परिवार की संपत्ति का मालिक होता है और परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखता है। उदाहरण: हिंदू संयुक्त परिवार।
- **मातृसत्तात्मक परिवार :**परिवार की सत्ता सबसे बड़ी महिला सदस्य के हाथ में होती है, जो परिवार की संपत्ति की मालिक होती है। पति परिवार में अधीनस्थ होता है। उदाहरण: गारो और खासी आदिवासी समाज।

आदर्श परिवार

आदर्श परिवार वह सामाजिक इकाई है जिसे समाज, संस्कृति, और धर्म की दृष्टि से उत्तम, स्थायी, सुसंगठित और सद्भावपूर्ण माना जाता है। यह परिवार न केवल अपने सदस्यों के लिए बल्कि समाज के लिए भी सुरक्षा, प्रेम, सहयोग और नैतिक शिक्षा का प्रमुख स्रोत होता है। आदर्श परिवार की परिभाषा भले ही समय, स्थान और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार भिन्न हो, लेकिन इसके कुछ सामान्य गुण होते हैं जो इसे परिवार का “आदर्श” बनाते हैं।

आदर्श परिवार के प्रमुख गुण

- **सामाजिक स्थिरता:** आदर्श परिवार समाज के नियमों, परंपराओं और संस्कारों का पालन करता है। यह सामाजिक व्यवस्था को स्थिर और मजबूत बनाता है।
- **सद्भाव एवं प्रेम:**परिवार के सभी सदस्य एक-दूसरे के प्रति प्रेम, सम्मान और समझदारी का व्यवहार रखते हैं। पारिवारिक सदस्यों के बीच झगड़े कम होते हैं और सहयोग की भावना होती है।
- **सामूहिकता एवं सहयोग:**परिवार में सभी सदस्य एक-दूसरे की सहायता करते हैं, चाहे आर्थिक, भावनात्मक या सामाजिक रूप से हो। समस्याओं का मिलजुलकर सामना किया जाता है।
- **संतान पालन-पोषण:**बच्चों को अच्छे संस्कार, शिक्षा और नैतिक मूल्य प्रदान करना आदर्श परिवार का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है।
- **समानता एवं न्याय:** परिवार में सभी सदस्यों को बराबर अधिकार और सम्मान दिया जाता है, चाहे वह पुरुष हो या महिला, बुजुर्ग हो या बच्चा।
- **धार्मिक और नैतिक अनुशासन:**आदर्श परिवार धार्मिक आस्था और नैतिक मूल्यों का पालन करता है, जो सदस्यों के चरित्र निर्माण में मदद करता है।
- **आर्थिक स्थिरता:** परिवार आर्थिक रूप से सक्षम होता है और संसाधनों का सही प्रबंधन करता है, जिससे सभी की जरूरतें पूरी हों।

Unleash the topper in you

आदर्श परिवार का सामाजिक महत्व

- **सामाजिक एकता का आधार:** आदर्श परिवार समाज की नींव होता है, जो सामाजिक संबंधों को मजबूत करता है।
- **नैतिक शिक्षा का केन्द्र:** बच्चों और युवाओं को सही और गलत का ज्ञान परिवार से ही मिलता है।
- **संकट में सहारा:** परिवार सदस्यों को जीवन की कठिनाइयों और संकटों में मानसिक और आर्थिक सहारा प्रदान करता है।
- **संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण:** आदर्श परिवार सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को नई पीढ़ी तक पहुँचाता है।

परिवार के मुख्य कार्य

(i). **सुरक्षा प्रदान करना** — बच्चों, बुजुर्गों और बीमारों की देखभाल और संरक्षण।

(ii). **भावनात्मक समर्थन** — प्रेम, स्नेह और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा देना।

(iii). **शिक्षा देना** — बच्चे की प्रारम्भिक शिक्षा परिवार से शुरू होती हैं जिसके अंतर्गत सामाजिक नियम, संस्कार और व्यवहार ज्ञान सिखाया जाता हैं । इसलिए बच्चे की पहली गुरु का दर्जा माँ को दिया जाता हैं । यहीं से वो अपनी मातृभाषा का ज्ञान प्राप्त करता हैं ।

(iv). **वित्तीय सुरक्षा** — भोजन, आवास, कपड़े और अन्य आवश्यकताएँ पूरी करना।

(v). **सांस्कृतिक परंपराएँ सिखाना** — रीति-रिवाज़ और संस्कृतियों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाना।

(vi). **शारीरिक और मानसिक देखभाल** — कमजोर या विकलांग सदस्यों की देखभाल करना।

(vii). **कार्य और जिम्मेदारियाँ बाँटना** — परिवार के सदस्यों के बीच कार्यों का उचित वितरण।

परिवार के कार्य में विभिन्न विद्वानों का मत :

- लुण्डबर्ग ने परिवार के प्रमुख **चार क्रियाकलाप** बतायें हैं -
  - ✓ यौन व्यवहार का नियम
  - ✓ संतान की उत्पति
  - ✓ बच्चो की देखभाल
  - ✓ प्रशिक्षण तथा श्रएम विभाजन
- आगबर्न व निमकाफ़ ने परिवार के प्रमुख **छः कार्य** बताए हैं -
  - ✓ आर्थिक
  - ✓ प्रकृत्यात्मक
  - ✓ रक्षात्मक आनंदपद
  - ✓ धार्मिक
  - ✓ शैक्षणिक
- प्रो डेविस ने परिवार के **चार कार्यो** का उल्लेख किया हैं -
  - ✓ प्रजनन
  - ✓ भरण पोषण
  - ✓ समाजीकरण
  - ✓ सामाजिक संरक्षण

संबधों का महत्त्व :

परिवार संयुक्त हो या एकल, परिवार के सदस्य एक साथ रहें या अलग-अलग, उनमें आपसी संबंध हमेशा बने रहते हैं। परिवार के सदस्य एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। वे एक-दूसरे के प्रति कुछ जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं जिससे पारिवारिक संबंध मे मजबूती आती हैं परिवार में स्नेह, आदर और विश्वास जैसे गुणों का जन्म होता हैं जो बच्चे के विकास मे भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पारिवारिक संबंध मज़बूत हों तो परिवार सुखी व सुरक्षित रहता है। पारिवारिक संबंध तभी मज़बूत होते हैं, जब-

- हर सदस्य परिवार के अन्य सदस्यों का आदर करे।
- हर सदस्य दूसरे के प्रति ज़िमेदारी निभाए।
- एक सदस्य दूसरे सदस्यों की भावनाओं को ठेस न पहुँचाए।
- सभी एक-दूसरे की मदद करें।
- लड़ने-झगड़ने के बजाय बातचीत द्वारा आपसी मनमुटाव दूर करें।

संबंध : जब दो या दो से अधिक व्यक्ति (पुरुष या महिला) भावनाओं, रक्त संबंध या विवाह के आधार पर एक दूसरे से जुड़े हुए महसूस करते हैं तो इसे संबंध की संज्ञा दी जाती हैं। संबंध **रक्त या भावनात्मक या वैवाहिक** किसी भी प्रकार का हो सकता हैं उदाहरण स्वरूप माँ -पुत्र या पिता - पुत्र का संबंध रक्त संबंध हैं परंतु दो लोगो के मध्य मित्रता एक भावनात्मक संबंध हैं । जबकी विवाह के कारण उत्पन्न संबंध वैवाहिक संबंध कहलाते हैं ।

समाजीकरण एवं परिवार की इसकी भूमिका

समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के मानदंडों, मूल्यों, रीति-रिवाजों, और सांस्कृतिक ज्ञान को सीखता और आत्मसात करता है ताकि वह समाज का स्वीकार्य सदस्य बन सके। यह व्यक्तित्व विकास और सामाजिक व्यवहार का निर्माण करती है।

समाजीकरण के उद्देश्य

- सामाजिक नियमों और आदतों का ज्ञान देना।
- संस्कृति और परंपराओं का प्रसार।
- व्यक्तित्व का विकास।
- सामाजिक भूमिका और कर्तव्यों की समझ।
- सामाजिक सद्भाव और अनुशासन का निर्माण।

समाजीकरण के प्रकार

1. प्राथमिक समाजीकरण (Primary Socialization)

- **परिभाषा:** व्यक्ति के जीवन का पहला और सबसे महत्वपूर्ण समाजीकरण जो परिवार में होता है।
- **माध्यम:** परिवार, खासकर माता-पिता और अन्य परिवारजन।
- **विशेषताएँ:**
  - ✓ सामाजिक मूल्यों, भाषा, संस्कारों की प्रारंभिक शिक्षा।
  - ✓ सामाजिक व्यवहार, नैतिकता, शिष्टाचार सीखना।
  - ✓ व्यक्ति की सामाजिक पहचान बनती है।
- **महत्व:** यह समाजीकरण व्यक्ति की सामाजिक नींव तैयार करता है।

2. द्वितीयक समाजीकरण (Secondary Socialization)

- **परिभाषा:** प्रारंभिक समाजीकरण के बाद जो समाजीकरण व्यक्ति जीवन के बाहर परिवार के माध्यम से प्राप्त करता है।
- **माध्यम:** स्कूल, मित्र समूह, कार्यस्थल, मीडिया आदि।
- **विशेषताएँ:**
  - ✓ नई सामाजिक भूमिकाओं और नियमों का सीखना।
  - ✓ समाज के विविध समूहों में सामंजस्य स्थापित करना।
  - ✓ सामाजिक कौशल और ज्ञान का विस्तार।

3. तृतीयक समाजीकरण (Tertiary Socialization)

- जीवन के बाद के स्तरों में नए सांस्कृतिक संदर्भों और सामाजिक भूमिकाओं को सीखने की प्रक्रिया, जैसे कि विवाह, नौकरी परिवर्तन, नए समाज में प्रवेश आदि।

समाजीकरण के माध्यम

- **परिवार:** प्राथमिक समाजीकरण का प्रमुख माध्यम।
- **विद्यालय:** शिक्षा, सामाजिक नियमों का प्रशिक्षण।
- **मित्र समूह:** सामाजिक आदतें, व्यवहार।
- **मीडिया:** आधुनिक समाज में सूचना और संस्कारों का स्रोत।
- **धार्मिक संस्थाएँ:** नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का संचार।

समाजीकरण का महत्व

- सामाजिक नियंत्रण बनाए रखना।
- सामाजिक एकता और सद्भाव स्थापित करना।
- व्यक्तियों को समाज के नियमों का पालन करना सिखाना।
- संस्कृति के निरंतरता और संरक्षण में योगदान।
- व्यक्ति को समाज के अनुकूल बनाना।

परिवार और समाज में संबंध

परिवार और समाज के बीच संबंध **परस्पर-निर्भर**, **सहायोगात्मक** और **परिवर्तनशील** होते हैं। इनके बीच संबंधों की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. पारस्परिक निर्भरता

- परिवार समाज की इकाई है और समाज, परिवारों का संग्रह।
- समाज परिवारों को नियम, मूल्य और संरक्षण प्रदान करता है, जबकि परिवार सामाजिक मूल्यों की शिक्षा देता है।

2. सामाजिकीकरण की प्रक्रिया

- बच्चा परिवार से सामाजिक व्यवहार, भाषा, संस्कृति, नैतिकता और अनुशासन सीखता है।
- समाज में उचित व्यवहार करने की नींव परिवार ही रखता है।

3. मूल्य और परंपराओं का स्थानांतरण

- परिवार सामाजिक मान्यताओं और परंपराओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाता है।
- समाज, परिवार को उन मान्यताओं के पालन के लिए प्रेरित करता है।

4. सामाजिक नियंत्रण

- परिवार और समाज दोनों ही व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं।
- यदि कोई व्यक्ति सामाजिक नियमों का उल्लंघन करता है तो परिवार और समाज दोनों उसे सुधारने का प्रयास करते हैं।

परिवार की समाज में भूमिका

- **सामाजिक स्थिरता** – परिवार सामाजिक संरचना को स्थिर रखने में सहायक होता है।
- **आर्थिक योगदान** – परिवार श्रमिक, उपभोक्ता और उत्पादक के रूप में समाज की अर्थव्यवस्था में योगदान देता है।
- **शिक्षा और संस्कृति** – परिवार प्राथमिक शिक्षा और सांस्कृतिक विरासत के संवाहक होते हैं।
- **नैतिकता का विकास** – बच्चे में अच्छे-बुरे का भेद परिवार से ही उत्पन्न होता है।

समाज की परिवार में भूमिका

- **सुव्यवस्थित जीवन के लिए नियम** – समाज परिवारों को जीवन जीने के लिए नियम, कानून और नैतिक दिशानिर्देश देता है।
- **संरक्षण और सहायता** – समाज में संस्थाएँ जैसे विद्यालय, अस्पताल, न्यायालय आदि परिवार को सहयोग और सुरक्षा प्रदान करते हैं।
- **अवसर और विकास** – समाज में विविध अवसर उपलब्ध होते हैं जिससे परिवार के सदस्य शिक्षा, व्यवसाय और आत्मविकास की दिशा में अग्रसर होते हैं।

आधुनिक समय में परिवार और समाज में संबंधों में परिवर्तन

- **एकल परिवार की प्रवृत्ति** बढ़ी है जिससे पारंपरिक संयुक्त परिवार की प्रणाली कमजोर हुई है।
- **नैतिक मूल्यों में ह्रास** दिखाई देता है जो पारिवारिक और सामाजिक ताने-बाने को प्रभावित करता है।
- **महिला सशक्तिकरण**, **शिक्षा का विस्तार**, और **आर्थिक स्वतंत्रता** के कारण पारिवारिक भूमिकाओं में बदलाव आया है।
- **डिजिटल और सोशल मीडिया** ने पारिवारिक बातचीत और सामूहिक समय को प्रभावित किया है।

परिवार के बुजुर्ग

- बुजुर्ग परिवार की रीढ़ होते हैं और परिवार में उनका एक महत्वपूर्ण स्थान होता है।
- शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति परिवार की देखभाल करता है, धन कमाता है और परिवार की उन्नति में सहायक होता है।
- वहीं कमजोर और बुजुर्ग सदस्य भी परिवार में उतना ही महत्त्व रखते हैं।वे परिवार के सदस्यों को सही मार्गदर्शन देते हैं, बच्चों को अच्छे संस्कार सिखाते हैं और उनकी देखभाल में बच्चे अधिक सुरक्षित महसूस करते हैं।
- बड़े-बूढ़े, परिवार के आधारस्तंभ होते हैं। उनका अनुभवपूर्ण जीवन और मार्गदर्शन, परिवार के अन्य सदस्यों विशेषतः युवा पीढ़ी को नैतिक मूल्यों, अनुशासन और संस्कारों की शिक्षा देता है। उनकी उपस्थिति बच्चों को सुरक्षा का भाव देती है और वे अपनी संस्कृति से जुड़ाव महसूस करते हैं। बुजुर्ग, परिवार की विरासत और परंपराओं के संवाहक होते हैं।
- विश्वभर में 65 वर्ष या उससे अधिक आयु के व्यक्ति को "वरिष्ठ नागरिक" माना जाता है, जबकि भारत में यह सीमा 60 वर्ष से अधिक है। आने वाले वर्षों में भारत में बुजुर्गों की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि अपेक्षित है—**2050 तक यह 19% तक पहुँच सकती है**, जो कि अभी लगभग 6% है।

बुजुर्गों के प्रति संवेदनशीलता की आवश्यकता

बढ़ती उम्र के साथ बुजुर्गों को शारीरिक, मानसिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जैसे-जैसे उनकी शारीरिक क्षमताओं में कमी आती है, वे बीमारियों, अकेलेपन और उपेक्षा के शिकार हो सकते हैं। वे समाज के अत्यंत संवेदनशील वर्ग में आते हैं। ऐसे में समाज और परिवार दोनों की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वे बुजुर्गों के प्रति संवेदनशील बनें और उनकी उचित देखभाल करें।

बुजुर्गों की देखभाल: परिवार की भूमिका

परिवार, बुजुर्गों की देखभाल में सबसे पहला और सबसे अहम योगदान देता है। परिवार की ओर से निम्नलिखित जिम्मेदारियाँ निभाई जा सकती हैं:

- नियमित **स्वास्थ्य जांच** कराना और जरूरत के अनुसार **उचित चिकित्सा सुविधा** प्रदान करना।
- बुजुर्गों को **आदर और सम्मान** देना, तथा उन्हें सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित करना।
- उनके साथ **समय बिताना**, संवाद बनाए रखना, और उनकी **जरूरतों का ध्यान** रखना (जैसे भोजन, दवाइयाँ, कपड़े आदि)।
- उन्हें **हल्के व्यायाम** के लिए प्रोत्साहित करना, जिससे उनका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक बना रहे।
- उन्हें **नवीन तकनीकों** (जैसे स्मार्टफोन, इंटरनेट, ऑनलाइन भुगतान आदि) से अवगत कराना, जिससे उनमें आत्मविश्वास बढ़े और वे सामाजिक रूप से जुड़े रहें।

बुजुर्गों की देखभाल: सरकार की भूमिका

योजना का नाम	वर्ष	लाभ/उद्देश्य
राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम	1995	गरीबी रेखा से नीचे जीवन जीने वाले बुजुर्गों को पेंशन
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना	2007	60 वर्ष से अधिक उम्र वालों को मासिक पेंशन
अटल पेंशन योजना	2015	असंगठित क्षेत्र में कार्यरत लोगों को वृद्धावस्था में सुनिश्चित पेंशन
राष्ट्रीय वरिष्ठ जन स्वास्थ्य योजना	2016-17	60 वर्ष से ऊपर के लोगों के लिए स्वास्थ्य सेवाएँ
प्रधानमंत्री वय वंदना योजना	2017	बुजुर्गों को सुरक्षित निवेश और पेंशन का विकल्प
आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना	2018	5 लाख तक की मुफ्त स्वास्थ्य बीमा योजना
अटल वयो अभ्युदय योजना	2021	वृद्धजनों को विभिन्न सेवाएँ और सामाजिक समावेशन
आयुष्मान भारत हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर	—	बुजुर्गों सहित सभी के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाएँ

बीमार व्यक्ति के प्रति संवेदनशीलता

मानव समाज की मूल आत्मा करुणा, सेवा और सह-अस्तित्व में निहित है। इन्हीं मूल्यों की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है – **बीमारों के प्रति संवेदनशीलता**। जब कोई व्यक्ति बीमार होता है, तो वह न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से भी संघर्ष करता है। ऐसे समय में उस व्यक्ति की सहायता करना और उसके प्रति संवेदनशील होना न केवल एक सामाजिक उत्तरदायित्व है, बल्कि एक **मानवीय कर्तव्य** भी है।

बीमार लोगों की देखभाल और उनके प्रति सहानुभूति जागृत करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष **11 फरवरी को "विश्व रोगी दिवस (World Day of the Sick)"** मनाया जाता है। इसकी शुरुआत **1992 में वेटिकन सिटी** से हुई थी।

बीमारी के समय व्यक्ति की स्थिति

- **शारीरिक कमजोरी:** रोग शरीर की ऊर्जा को क्षीण कर देता है।
- **मानसिक तनाव:** व्यक्ति निराशा, चिंता, अकेलेपन और भय से घिर जाता है।
- **भावनात्मक असुरक्षा:** उसे यह डर सताता है कि कहीं वह बोझ न बन जाए।

यहाँ कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए है-

1. **स्वास्थ्य की निगरानी :**परिवार के बीमार सदस्य व बड़े-बुजुर्गों को 24×7 निगरानी की आवश्यकता होती है। बीमार सदस्य का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करें और नियमित रूप से उनके डॉक्टर के निर्देशों का पालन करना और यदि स्थिति में कोई बदलाव आए, तो तुरन्त डॉक्टर से सम्पर्क करना चाहिए।
2. **भावनात्मक समर्थन :** बीमार व्यक्ति को मानसिक रूप से समर्थन देने के लिए उन्हें आश्वस्त करें कि, आप उनके साथ है।
3. **साफ-सफाई और आराम :** बीमार व्यक्ति का आराम और स्वच्छता बहुत जरूरी है। उनके बिस्तर को साफ रखें और उन्हें आरामदायक माहौल प्रदान करना चाहिए।
4. **पोषण और जलयोजन :** सही आहार और पर्याप्त पानी का सेवन सुनिश्चित करें। बीमार व्यक्ति को हल्का पचने योग्य भोजन दे और यदि जरूरी हो, तो डॉक्टर की सलाह के अनुसार विशेष आहार योजना पर काम करना चाहिए।

5. **दवाईयाँ और चिकित्सा सहायता :** दवाइयाँ समय पर देना और डॉक्टरों के निर्देशों का पालन करना जरूरी है। अगर किसी विशेष चिकित्सा उपकरण या सहायता की आवश्यकता हो, तो उसका ध्यान रखना चाहिए।
6. **स्वयं की देखभाल :** जब आप किसी के देखभालकर्ता होते है, तो यह जरूरी है कि आप अपनी सेहत का भी ध्यान रखें नियमित रूप से विश्राम ले और खुद को भी समय देना चाहिए।

किशोरों के प्रति संवेदनशीलता :

किशोरावस्था (12-18 वर्ष) जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं संक्रमणकालीन चरण होता है। यह केवल शारीरिक परिवर्तन का ही नहीं, बल्कि मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से एक **संघर्ष और तूफान** का काल भी होता है। **प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक स्टेनली हॉल ने किशोरावस्था को "तूफान और तनाव का काल" कहा है।** इस अवस्था में किशोरों की सोचने, समझने और व्यवहार करने की प्रक्रिया में गहरा परिवर्तन आता है। इसलिए इस नाजुक अवस्था में किशोरों के प्रति समाज और परिवार का **संवेदनशील रवैया** बेहद जरूरी है।

किशोरावस्था में होने वाले प्रमुख परिवर्तन

1. **शारीरिक परिवर्तन**
- तेजी से कद, वजन और शरीर के अंगों में विकास।
- हार्मोनल परिवर्तन से भावनात्मक अस्थिरता।
- शरीर में बदलाव के कारण आत्म-संकोच या भ्रम।

2. **मनोवैज्ञानिक बदलाव**
- आत्म-चेतना, पहचान की खोज और स्वतंत्रता की चाह।
- अत्यधिक भावुकता, चिड़चिड़ापन और कभी-कभी विद्रोही स्वभाव।
- निर्णय लेने और सोचने के तरीके में परिवर्तन।

3. **सामाजिक और व्यवहारिक बदलाव**
- साथियों (Peers) का प्रभाव बढ़ना।
- सोशल मीडिया और इंटरनेट की ओर आकर्षण।
- नए अनुभवों और प्रयोगों की जिज्ञासा।

किशोरों के प्रति संवेदनशीलता क्यों आवश्यक है?

किशोर ऐसी अवस्था में होते हैं जहाँ उन्हें न तो पूरी स्वतंत्रता मिलती है, और न ही वे बच्चों की तरह संरक्षित रहना चाहते हैं। वे दिशा, समर्थन और समझ की तलाश में रहते हैं। यदि उन्हें यह न मिले, तो वे मानसिक तनाव, अवसाद, नशा, गलत संगत, साइबर अपराध या आत्मघात जैसे जोखिमों की ओर बढ़ सकते हैं ।

किशोरों के प्रति संवेदनशीलता के कुछ उपाय

1. **संवाद और समझ**
- किशोरों से **खुलकर बात करें**, उनके मन की बात जानें।
- उन्हें यह अहसास दिलाएँ कि आप उनके **सच्चे मार्गदर्शक और सहायक** हैं।
- उनकी बातों को **हल्के में न लें**, चाहे वो कितनी भी छोटी लगें।

2. **भावनात्मक समर्थन**
- शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों को **स्वाभाविक** मानकर सहारा दें।
- **चिड़चिड़ापन या क्रोध** को अनुशासन से नहीं, सहानुभूति से समझें।
- **कॅरियर को लेकर तनाव** या भविष्य की चिंता को साझा करें।

3. **सही दिशा और मार्गदर्शन**
- किशोरों को **सोशल मीडिया**, इंटरनेट और तकनीकी उपकरणों का **सुरक्षित और जिम्मेदार** उपयोग सिखाएँ।
- उन्हें **किताबों, खेलकूद और रचनात्मक गतिविधियों** की ओर प्रेरित करें।
- आत्म-अनुशासन और समय प्रबंधन के कौशल विकसित कराएँ।

4. **सुरक्षा और जागरूकता**
- **यौन शोषण, साइबर बुलिंग, अनुचित स्पर्श और व्यवहार** के बारे में जानकारी दें।
- **"ना कहना"** सिखाएँ और **संकट के समय किससे मदद लें** – यह स्पष्ट करें।
- किशोरों को **भावनात्मक मजबूती और आत्म-सम्मान** की भावना से भरपूर करें।

परिवार और शिक्षकों की भूमिका

- **माता-पिता** किशोरों के पहले मार्गदर्शक होते हैं। उन्हें **धैर्य, प्रेम और समय** देना चाहिए।
- **शिक्षक** केवल शिक्षा नहीं, बल्कि जीवन मूल्य और भावनात्मक समझ भी प्रदान करें।
- **समाज और स्कूल मिलकर** ऐसा वातावरण बनाएँ जहाँ किशोर बिना डर के खुद को अभिव्यक्त कर सकें।

विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति संवेदनशीलता

प्रत्येक बालक अद्वितीय होता है, लेकिन कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जिनकी **शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक, भावनात्मक या सामाजिक आवश्यकताएँ** दूसरों से भिन्न होती हैं। ऐसे बच्चे जो सामान्य बच्चों से बुद्धि, सोचने की क्षमता, सीखने के कौशल या शारीरिक संरचना में अलग होते हैं, उन्हें **विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे** या **विशेष बालक** कहा जाता है।

ये बच्चे समाज का एक संवेदनशील वर्ग होते हैं, जिन्हें **विशेष देखभाल, शिक्षा और सामाजिक सहयोग** की आवश्यकता होती है ताकि वे भी गरिमा और आत्मनिर्भरता से जीवन जी सकें।

विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के प्रकार

डॉ. भार्गव के अनुसार, विशिष्ट बालकों को चार प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:

A. **शारीरिक रूप से विशिष्ट बालक**
   1. **संवेदी विकलांगता (Sensory)** – दृष्टिहीन, मूक-बधिर आदि।
   2. **गति विकलांगता (Motor)** – अंग-भंग, चलने में कठिनाई।
   3. **बहु-विकलांगता (Multiple Disabilities)** – दो या दो से अधिक अक्षमताएँ।

B. **शैक्षिक रूप से विशिष्ट बालक**
   1. शैक्षिक रूप से समृद्ध (उत्कृष्ट छात्र)
   2. शैक्षिक रूप से पिछड़े बालक
   3. कोई विषय न सीख पाने वाले बालक

C. **मानसिक रूप से विशिष्ट बालक**
   1. प्रतिभाशाली (IQ > 140)
   2. मंदबुद्धि (IQ < 70)
   3. सृजनात्मक बालक (रचनात्मक विचारों से परिपूर्ण)

D. **सामाजिक रूप से विशिष्ट बालक**
   1. कुसमायोजित बालक (Maladjusted)
   2. समस्यात्मक बालक (Problem child)
   3. बाल अपराधी (Juvenile delinquent)
   4. सांवेगिक रूप से परेशान बालक

हेवार्ड एवं ओरलैंस्की के अनुसार अन्य श्रेणियाँ:

- दृष्टि दोष, श्रवण दोष, भाषा दोष, मानसिक मंदता, शिक्षा में असक्षम, गंभीर बहु-विकलांगता आदि।

प्रमुख अवस्थाएँ और अक्षमताएँ

1. **बौद्धिक विकलांगता** – मानसिक विकास में देरी, धीमी सीखने की गति।
2. **ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD)** – सामाजिक संवाद में कठिनाई।
3. **लर्निंग डिसएबिलिटी** –
   - ✓ **डिस्लेक्सिया** (पढ़ने में कठिनाई)
   - ✓ **डिस्ग्राफिया** (लिखने में समस्या)
   - ✓ **डिस्कैल्कुलिया** (गणित संबंधी समस्या)
   - ✓ **डिस्फैजिया** (बोलने में समस्या)
4. **शारीरिक विकलांगता** – अंगों की विहति, मांसपेशियों की कमजोरी।
5. **दृष्टि/श्रवण समस्याएँ** – देखने या सुनने में परेशानी।

इनकी देखभाल के उपाय

- **व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP) :** हर विशिष्ट बच्चे के लिए उसकी ज़रूरतों के अनुसार शिक्षा और विकास योजना बनाई जाती है।
- **स्वस्थ जीवनशैली और पोषण :** संतुलित आहार, पर्याप्त नींद और नियमित स्वास्थ्य जांच ज़रूरी होती है।
- **समझ और सहानुभूति :** इनके व्यवहार और प्रतिक्रियाओं को संवेदनशीलता से समझना चाहिए, जिससे आत्मविश्वास बढ़ता है।
- **विशेषज्ञों की सहायता :** मनोवैज्ञानिक, स्पीच थेरेपिस्ट, फिजियोथेरेपिस्ट, विशेष शिक्षक आदि से सहयोग। **पारिवारिक सहयोग :** माता-पिता और परिवार का समर्थन बच्चों को सुरक्षित और पोषक माहौल देता है।
- **सामाजिक और भावनात्मक समर्थन :** आत्म-सम्मान और सामाजिक कौशल विकसित करने के लिए सहयोगी वातावरण आवश्यक है।
- **शारीरिक गतिविधियाँ :** शारीरिक विकास के लिए योग, व्यायाम या चिकित्सा आधारित गतिविधियाँ।
- **सहायक संसाधनों का उपयोग :** जैसे व्हीलचेयर, ब्रेल लिपि, श्रवण यंत्र, विशेष शिक्षा उपकरण आदि।

प्रमुख भारतीय भाषाओं में परिवार के सदस्यों के संबोधन						
परिवार सदस्य	**हिंदी**	**तमिल (हिंदी उच्चारण)**	**तेलुगु (हिंदी उच्चारण)**	**पंजाबी (हिंदी उच्चारण)**	**बंगाली (हिंदी उच्चारण)**	**गुजराती (हिंदी उच्चारण)**
माता	माता / माँ	थाई	ताल्ली	मां	मा	मा
पिता	पिता / पिताजी	अप्पा	तंद्रि	पित्ता	बाबा	पित्ता
भाई	भाई	अन्नन	अन्न	भ्रां	भाई	भाई
बहन	बहन	अक्का	चेली	भाईन	बों	बहेन
दादा	दादा	थाथ्था	थाता	दादा	दादु	दादा
दादी	दादी	पाट्टी	अम्मम्मा	दादी	दादी	दादी
चाचा	चाचा	पित्था	मामा	चाचा	काका	काका
चाची	चाची	पिथ्थी	मामम्मा	चाची	काकिमा	काकी
बुआ	बुआ	मामी	मामा	फुआ	फू	फुआ
फूफा	फूफा	मामा	मामागरु	फूपहा	फूपु	फूफा
पति	पति	कनवन	भरता	पति	स्वामी	पति
पत्नी	पत्नी	मनैवि	भार्या	पतनी	स्त्री	पतनी
बेटा	बेटा	मघन	कुमारुडु	पुत्तर	छेले	पुत्र
बेटी	बेटी	मगल	कुमर्ते	धी	मेये	पुत्री

दादी के घरेलू नुस्खे			
समस्या/उपयोग	**घरेलू नुस्खा**	**सामग्री**	**लाभ**
सर्दियों में रूखी त्वचा	गुलाब जल + ग्लिसरीन + नींबू रस	गुलाब जल, ग्लिसरीन, नींबू	त्वचा को नमी देना, रूखापन दूर करना
खांसी और सर्दी	अदरक का काढ़ा + शहद	अदरक, शहद	गले को आराम, खांसी में राहत
पाचन सुधार	सौंफ और अजवाइन	सौंफ, अजवाइन	गैस और अपच में राहत
बालों की देखभाल	आंवले का तेल, मेथी का पानी	आंवला, मेथी	बाल मजबूत और घने बनाना
गले की खराश	नमक पानी से गरारे	नमक, पानी	संक्रमण में कमी, आराम
सिर दर्द	पुदीने का पेस्ट	पुदीने के पत्ते	दर्द में राहत
जलन और खुजली	एलोवेरा जेल	एलोवेरा	त्वचा को ठंडक और आराम
थकान दूर करना	चुकंदर का रस	चुकंदर	ऊर्जा बढ़ाना
कीट भगाना	कपूर	कपूर	कपड़ों में कीड़े नहीं लगना
घर की सफाई	नींबू और नमक	नींबू, नमक	सतहों की सफाई और जीवाणु नाश

बाल विकास में परिवार का महत्त्व

1. **भावनात्मक विकास:** बालक के मानसिक और सामाजिक विकास के लिए माता-पिता का स्नेह, प्यार और समझ अत्यंत आवश्यक होता है। परिवार में बच्चों को सुरक्षा, आत्मविश्वास और प्रेम की भावना मिलती है, जिससे उनका भावनात्मक विकास होता है। जब माता-पिता बच्चे के साथ संवेदनशील और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते हैं, तो बच्चे में मानसिक स्थिरता और सामाजिक जुड़ाव की भावना विकसित होती है।
2. **सांवेगिक विकास:** परिवार बालक को नैतिकता, प्रेम, सहानुभूति, और सामाजिक व्यवहार की शिक्षा देता है। बच्चों को परिवार में सही-गलत का भेद, दूसरों के प्रति सम्मान और सहानुभूति की भावना विकसित होती है। यह सांवेगिक विकास बालक को अपने और दूसरों के भावनाओं को समझने और नियंत्रित करने में मदद करता है, जो सामाजिक जीवन में आवश्यक है।
3. **शारीरिक एवं मानसिक विकास:** एक स्वस्थ और सकारात्मक पारिवारिक वातावरण बालक की शारीरिक और मानसिक क्षमताओं के विकास में सहायक होता है। परिवार बच्चों को पोषण, स्वास्थ्य सेवा, आराम और शिक्षा प्रदान करता है, जो उनकी शारीरिक वृद्धि और मानसिक क्षमता को बढ़ावा देता है। यदि परिवार का वातावरण अच्छा नहीं है तो बच्चे का संपूर्ण विकास बाधित हो सकता है।
4. **संस्कार और आदतें:** परिवार से ही बच्चे में अच्छे संस्कार और आदतें उत्पन्न होती हैं, जो उसके पूरे जीवन को प्रभावित करती हैं। परिवार में सिखाये गए संस्कार जैसे ईमानदारी, सम्मान, अनुशासन, सहिष्णुता, और परोपकार बच्चे के व्यक्तित्व का आधार बनते हैं। ये संस्कार बच्चे को समाज में स्वीकार्य और सम्मानित बनाते हैं।
5. **समाज में समायोजन:** परिवार में प्राप्त शिक्षा, सामाजिक नियम और व्यवहार बच्चे को समाज में समायोजित होने में मदद करते हैं। परिवार में सीखी हुई सामाजिक योग्यताएँ जैसे संवाद कौशल, सहयोग, अनुशासन आदि बच्चे को विद्यालय, मित्र समूह और समाज के अन्य क्षेत्रों में सफल बनाती हैं। परिवार की यह भूमिका बच्चे के सामाजिक विकास के लिए अनिवार्य है।

परिवार में शिक्षा का महत्त्व

परिवार किसी भी व्यक्ति का प्रथम और सबसे प्रभावशाली शिक्षक होता है। शिक्षा केवल विद्यालय या पुस्तकालय तक सीमित नहीं है, बल्कि परिवार में मिलने वाली शिक्षा का व्यक्ति के संपूर्ण विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है।

1. प्रारंभिक शिक्षा का स्रोत

- परिवार बच्चे का पहला विद्यालय होता है।
- यहाँ से बच्चे को जीवन के मूलभूत व्यवहार, संस्कार और आदतें सीखने को मिलती हैं।
- बच्चे का सर्वांगीण विकास परिवार में प्राप्त शिक्षा से शुरू होता है।

2. नैतिक और सामाजिक मूल्यों का विकास

- परिवार में ही बच्चे को ईमानदारी, सहानुभूति, सहिष्णुता, सम्मान आदि नैतिक मूल्य सिखाए जाते हैं।
- सामाजिक नियम और परंपराएं भी परिवार से ही समझ में आती हैं।
- ये मूल्य बच्चे के सामाजिक व्यवहार को सुधारने में सहायक होते हैं।

3. बौद्धिक विकास में योगदान

- माता-पिता बच्चों को पुस्तकें पढ़ने, सवाल पूछने और सोचने के लिए प्रेरित करते हैं।
- परिवार में संवाद और चर्चा से बच्चों का ज्ञान बढ़ता है।
- बच्चों के ज्ञान और सोचने की क्षमता को बढ़ावा मिलता है।

4. भावनात्मक सुरक्षा और समर्थन

- परिवार बच्चे को भावनात्मक सुरक्षा देता है, जिससे बच्चे में आत्मविश्वास और साहस आता है।
- माता-पिता और परिवार के सदस्यों का प्रोत्साहन बच्चे की शिक्षा में रुचि बढ़ाता है।

5. शिक्षा के प्रति सही दृष्टिकोण बनाना

- परिवार में शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच विकसित होती है।
- यह बच्चे को पढ़ाई में अनुशासित और मेहनती बनाता है।
- अच्छे आदर्श और प्रेरणा का स्रोत होता है।

6. संस्कार और आदर्शों का स्थान

- परिवार से मिलने वाली शिक्षा बच्चे के व्यक्तित्व को संवारती है।
- धार्मिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक संस्कार भी परिवार से ही सीखते हैं।

7. जीवन के व्यवहारिक ज्ञान की प्राप्ति

- परिवार में बच्चे को जीवन के व्यवहारिक ज्ञान जैसे समय प्रबंधन, जिम्मेदारी निभाना, समस्या समाधान आदि सिखाए जाते हैं।
- यह शिक्षा बच्चे को जीवन में आत्मनिर्भर बनाती है।

मित्रता

- मित्रता या दोस्ती की कोई एक परिभाषा नहीं हो सकती। लेकिन सामान्य तौर पर दोस्ती का मतलब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच स्नेह, विश्वास, सहयोग और समर्थन का पारस्परिक संबंध होता है।
- सच्चे दोस्त सुख-दुख में साथ देते हैं, मुश्किल हालात में एक-दूसरे का साथ देते हैं और हर परिस्थिति में एक-दूसरे की रक्षा करने की कोशिश करते हैं। दोस्तों में एक-दूसरे के प्रति सम्मान होता है। दोस्तों के बीच इस तरह के रिश्ते को दोस्ती कहते हैं।
- संसार में दोस्ती ही वह रिश्ता है जिसमें हम अपनी रुचि के आधार पर साथी/मित्र/साथी चुनते हैं। हर कोई अपनी पसंद के दोस्त चुनने के लिए स्वतंत्र है और कोई भी किसी दूसरे व्यक्ति के साथ जबरदस्ती दोस्ती नहीं कर सकता। दोस्त बच्चे के समग्र विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। बचपन और किशोरावस्था के समय में फलदायी सामाजिक संबंध बच्चे को बेहतर समग्र व्यक्तित्व विकसित करने और बाद में मनोवैज्ञानिक विकारों से बचाने में मदद करते हैं।

मित्रों के प्रकार

- **स्कूल मित्रता** — स्कूल में बनती है।
- **परिवार के मित्र** — परिवार के सदस्यों के दोस्त।
- **पड़ोसी मित्रता** — नजदीकी रहने वालों के बीच।
- **संगठन या खेल मित्रता** — खेल, क्लब, या अन्य गतिविधियों से जुड़ी मित्रता।

अरस्तू के अनुसार मित्रता को तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है

- उपयोगिता की मित्रता इस प्रकार की मित्रता में दो व्यक्ति अपने-अपने हित के लिए मित्र होते हैं।
- खुशी की दोस्ती इस तरह के लोग एक दूसरे के साथ अपनी खुशी के पल साझा करते हैं।
- अच्छे लोगों की दोस्ती इस तरह की दोस्ती में दो दोस्त एक दूसरे के प्रति परस्पर सम्मान रखते हैं। इस तरह की दोस्ती आपसी हित और खुशी के कारण नहीं होती है

मित्रता का महत्व

- **सहयोग और सहायता:** दोस्त मुश्किल समय में साथ देते हैं।
- **सुख-दुख बांटना:** दोस्त खुशियों और दुखों को बांटते हैं।
- **सकारात्मक सोच:** दोस्त हमें अच्छा सोचने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।
- **स्वस्थ जीवन:** अच्छे मित्र होने से मानसिक तनाव कम होता है।
- **सीखने का मौका:** दोस्तों से नई बातें सीखने को मिलती हैं

मित्रता कैसे बनती है?

- एक-दूसरे की बात सुनकर
- मदद करके
- साथ समय बिताकर
- सम्मान देकर
- भरोसा रखकर

मित्रता का बालविकास पर प्रभाव

1. सामाजिक विकास पर प्रभाव

- मित्रता से बच्चे में समूह में रहने और सहयोग करने की भावना विकसित होती है।
- बच्चे दूसरों के साथ संवाद करना और मेलजोल बढ़ाना सीखते हैं।
- सामाजिक नियमों, नियमों और व्यवहार को समझने में मदद मिलती है।
- मित्रों के साथ बहस, चर्चा और समझौते से सामाजिक समझ बढ़ती है।

2. भावनात्मक विकास पर प्रभाव

- मित्रता बच्चों को प्रेम, स्नेह, अपनापन और सुरक्षा की अनुभूति कराती है।
- वे भावनाओं को व्यक्त करना और समझना सीखते हैं।
- मित्रों के साथ होने वाली सकारात्मक भावनाएं बच्चे के आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं।
- तनाव, चिंता और अकेलेपन जैसी भावनाओं को कम करने में मदद मिलती है।

3. बौद्धिक विकास पर प्रभाव

- मित्रों के साथ संवाद और विचारों के आदान-प्रदान से सोचने-समझने की क्षमता बढ़ती है।
- बच्चे अपनी समस्याओं का समाधान खोजने के लिए प्रेरित होते हैं।
- नई जानकारी और अनुभव साझा करते हैं, जिससे सीखने की प्रक्रिया मजबूत होती है।

4. व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव

- मित्रता बच्चे के व्यक्तित्व को निखारती है।
- बच्चे में आत्म-समर्पण, सहनशीलता, और नेतृत्व जैसी क्षमताएं विकसित होती हैं।
- सामाजिक व्यवहार में सुधार आता है और बच्चे अधिक मिलनसार बनते हैं।

5. नैतिक और सामाजिक मूल्य सीखना

- मित्रों के समूह में बच्चे उचित और अनुचित का भेद समझते हैं।
- वे सहानुभूति, न्याय, और जिम्मेदारी जैसे नैतिक गुण सीखते हैं।
- सामाजिक नियमों और आदर्शों को अपनाना आसान होता है।

6. खेल-कूद और शारीरिक विकास

- मित्रों के साथ खेलना बच्चे के शारीरिक स्वास्थ्य और कौशल विकास में सहायक होता है।
- टीमवर्क और प्रतिस्पर्धा से अनुशासन और धैर्य आता है।

मित्रता का शिक्षा पर प्रभाव

1. सीखने की रुचि बढ़ती है

- बच्चे जब अपने मित्रों के साथ पढ़ाई करते हैं तो उनकी सीखने की उत्सुकता और रुचि बढ़ती है।
- दोस्ती के कारण बच्चे पढ़ाई को एक बोझ नहीं बल्कि एक आनंदमय गतिविधि के रूप में देखते हैं।

2. सहयोग और सामूहिक सीखना

- मित्र एक-दूसरे की सहायता करते हैं, कठिन विषयों को समझने में मदद करते हैं।
- समूह में पढ़ाई से बच्चे बेहतर समझ पाते हैं और समस्याओं का समाधान खोज पाते हैं।
- इससे टीम वर्क और संवाद कौशल भी विकसित होते हैं।

3. सकारात्मक प्रतिस्पर्धा का माहौल

- दोस्ती में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा बच्चों को मेहनत करने और बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करती है।
- यह बच्चे को आत्मविश्वास और लक्ष्य प्राप्ति की ओर प्रेरित करती है।

4. भावनात्मक समर्थन

- दोस्त बच्चे के तनाव और डर को कम करते हैं, जिससे वह पढ़ाई में बेहतर ध्यान केंद्रित कर पाता है।
- मित्रों के साथ खुशहाल माहौल में बच्चे अपनी काबिलियत को बेहतर तरीके से प्रदर्शित करते हैं।

5. सामाजिक और नैतिक विकास

- मित्रता से बच्चे अपने सामाजिक और नैतिक गुणों को सीखते हैं, जैसे कि ईमानदारी, सहिष्णुता, और जिम्मेदारी।
- ये गुण शिक्षा के साथ-साथ जीवन में भी सफलता के लिए जरूरी होते हैं।

6. समस्या सुलझाने की क्षमता बढ़ती है

- दोस्ती के माध्यम से बच्चे समस्याओं पर चर्चा करते हैं और समाधान खोजते हैं, जिससे उनकी बौद्धिक क्षमता विकसित होती है।

परिवार और मित्रता का शिक्षा में प्रभाव एवं योगदान

1. परिवार का शिक्षा में प्रभाव और योगदान

- **प्राथमिक शिक्षा का आधार:** परिवार बच्चे की पहली सामाजिक इकाई होती है जहाँ से वह शिक्षा प्राप्त करना शुरू करता है। प्रारंभिक नैतिक, सामाजिक और बौद्धिक शिक्षा परिवार से ही मिलती है।
- **शिक्षा के प्रति रुचि और प्रेरणा:** परिवार के सदस्य, विशेषकर माता-पिता, बच्चों को स्कूल जाने, पढ़ाई में मन लगाने और लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रेरित करते हैं। माता-पिता की शिक्षा और उनके दृष्टिकोण का बच्चे की शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

- **पाठ्यक्रम के बाहर शिक्षा:** परिवार बच्चों को जीवन कौशल, संस्कार, व्यवहारिक ज्ञान और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रशिक्षण देता है, जो औपचारिक शिक्षा के पूरक होते हैं।
- **शैक्षिक वातावरण का निर्माण:** घर में पढ़ाई के लिए शांत, सुविधाजनक और प्रोत्साहित करने वाला माहौल बच्चों की सीखने की क्षमता को बढ़ाता है। परिवार की भूमिका इस वातावरण के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।
- **सहायता और मार्गदर्शन:** पढ़ाई में आने वाली समस्याओं के समाधान में परिवार का सहयोग बच्चों को पढ़ाई में निरंतर बने रहने और बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करता है।
- **भावनात्मक सुरक्षा और आत्मविश्वास:** परिवार का स्नेह और सहयोग बच्चों को मानसिक और भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस कराता है, जिससे वे शिक्षा में अधिक सक्रिय और उत्साही रहते हैं।
- **शिक्षा पर आर्थिक समर्थन:** परिवार बच्चों की शिक्षा के लिए आवश्यक संसाधन जैसे स्कूल फीस, किताबें, ट्यूशन आदि उपलब्ध कराता है, जिससे शिक्षा में बाधाएं कम होती हैं।
- **शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का निर्धारण:** परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, सांस्कृतिक मान्यताएं और शिक्षा के प्रति सोच बच्चे के शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को आकार देती है।

2. मित्रता का शिक्षा में प्रभाव और योगदान

- **सहपाठियों से सीखना:** मित्र शिक्षा में सहयोगी होते हैं। वे एक-दूसरे को कठिन विषय समझाने, अभ्यास करने और संशय दूर करने में मदद करते हैं।
- **सामाजिक कौशल का विकास:** मित्रों के साथ संवाद, सहयोग, बहस और समूह कार्य से बच्चों के सामाजिक और संचार कौशल का विकास होता है जो शिक्षा में महत्वपूर्ण है।
- **प्रेरणा और प्रतिस्पर्धा:** अच्छे मित्र बच्चे को बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करते हैं और सकारात्मक प्रतिस्पर्धा का माहौल बनाते हैं जिससे शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है।
- **भावनात्मक समर्थन:** कठिनाई के समय मित्र मानसिक सहारा देते हैं, जिससे बच्चे पढ़ाई में निराश नहीं होते और आत्मबल बना रहता है।
- **सामूहिक गतिविधियों और ज्ञानवर्धन:** मित्रों के साथ समूह परियोजनाएं, खेल, प्रतियोगिताएं आदि शिक्षा को रोचक और प्रभावी बनाते हैं।
- **सकारात्मक आदतें विकसित करना:** मित्रों के अच्छे व्यवहार से बच्चे में अनुशासन, समयपालन, मेहनत और लगन जैसी सकारात्मक आदतें विकसित होती हैं।
- **रुचियों का विस्तार:** मित्र विभिन्न विषयों और क्षेत्रों में रुचि बढ़ाने में मदद करते हैं जिससे बच्चे का ज्ञान और समझ का दायरा बढ़ता है।
- **संकट प्रबंधन और सहयोग:**
  मित्र शिक्षा संबंधी समस्याओं का सामूहिक समाधान खोजने में मदद करते हैं, जिससे बच्चे अधिक आत्मनिर्भर बनते हैं।

शिक्षक के लिए परिवार और मित्रता के सुझाव

1. परिवार के महत्व को समझें और बढ़ावा दें

- **परिवार ही बच्चे का पहला स्कूल होता है।** इसलिए परिवार की भूमिका को समझना अत्यंत आवश्यक है।
- शिक्षक को चाहिए कि वे बच्चों के परिवार के साथ नियमित संपर्क बनाएं और परिवार के महत्व को बच्चों के जीवन में समझाएं।
- बच्चों के माता-पिता को बच्चों की शिक्षा में सक्रिय भागीदार बनाएं।

2. माता-पिता और परिवार के सदस्यों के साथ संवाद बनाए रखें

- नियमित रूप से माता-पिता से बच्चों की प्रगति, उनकी समस्याओं और उनके व्यवहार के बारे में चर्चा करें।
- परिवार में यदि कोई समस्या हो तो उसके बारे में सजग रहें और आवश्यकता अनुसार मार्गदर्शन या सहायता दें।
- परिवार के सदस्यों को बच्चों के सकारात्मक विकास के लिए प्रोत्साहित करें।

3. बच्चों में परिवार के प्रति सम्मान और प्रेम की भावना विकसित करें

- बच्चों को परिवार के सदस्यों के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करना सिखाएं।
- परिवार के बुजुर्गों का सम्मान, भाई-बहनों का सहयोग और माता-पिता के प्रति कृतज्ञता का भाव जगाएं।

Unleash the topper in you

4. मित्रता का महत्त्व समझाएं और स्वस्थ मित्र संबंध बनाएं

- बच्चों को अच्छी और स्वस्थ मित्रता के गुणों के बारे में शिक्षित करें।
- गलत संगत से बचने और सही मित्रों का चुनाव करने के लिए मार्गदर्शन दें।
- मित्रों के साथ सहयोग, समझदारी, और सहानुभूति के व्यवहार को प्रोत्साहित करें।

5. विद्यालय में सह-पाठियों के साथ मेलजोल बढ़ावा दें

- समूह कार्यों और खेलों के माध्यम से बच्चों को सामाजिकता और टीम भावना का विकास करें।
- बच्चों को सिखाएं कि मित्रता में ईमानदारी, विश्वास और सहिष्णुता आवश्यक है।

6. परिवार और मित्रता से जुड़े सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा दें

- बच्चों में नैतिकता, सहानुभूति, धैर्य, और मदद करने की भावना को प्रोत्साहित करें।
- बच्चों को सिखाएं कि परिवार और मित्रता दोनों ही जीवन के मजबूत स्तंभ हैं।

7. समस्याओं के समय परिवार और मित्रों की भूमिका समझाएं

- बच्चों को यह बताएं कि जीवन में किसी भी समस्या या कठिनाई के समय परिवार और अच्छे मित्र ही सहारा होते हैं।
- मानसिक तनाव या दुविधा होने पर परिवार या शिक्षक से बात करने के लिए प्रेरित करें।

8. सकारात्मक पारिवारिक माहौल का समर्थन करें

- बच्चों को बताएं कि घर में प्यार, सहयोग, और सम्मान का वातावरण उनके आत्मविश्वास और सामाजिक विकास के लिए जरूरी है।
- परिवार के साथ समय बिताने, त्यौहार मनाने और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

9. अभिभावकों को शिक्षा के प्रति जागरूक बनाएं

- अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई, स्वास्थ्य, और सामाजिक विकास के प्रति सजग रखें।
- बच्चों के अध्ययन के लिए एक सकारात्मक और शांतिपूर्ण माहौल तैयार करने में अभिभावकों की भूमिका बताएं।

10. व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करें

- शिक्षक अपने व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से बच्चों और अभिभावकों को परिवार और मित्रता के महत्व के बारे में प्रेरित करते हैं। उन्हे प्राचीन मित्रता की कहानियाँ सुनाकर मित्रता की महत्वता का दर्शन करवाते हैं ।
- कहानियों, उदाहरणों और जीवन के अनुभवों से सीख को रोचक और प्रभावी बनाएं।

ToppersNotes Unleash the topper in you

2 CHAPTER प्राकृतिक संसाधन

वे संसाधन जो प्रकृति से प्राप्त होते हैं और कम से कम संशोधन के साथ उपयोग किए जाते हैं, उन्हें प्राकृतिक संसाधन कहा जाता है। इनका उपयोग मानव जीवन की आवश्यकता को पूरा करने और विकास के लिए किया जाता हैं ।

उदाहरण - वन, वायु, जल, मृदा, भूमि इत्यादि ।

भूमि संसाधन

भूमि प्राकृतिक संसाधनों में से एक अत्यंत महत्वपूर्ण संसाधन है, जो जीवन के लिए आवश्यक है। **भूमि** का उपयोग खेती, आवास, उद्योग, परिवहन, और अन्य कई कार्यों के लिए किया जाता है। भूमि न केवल हमारे जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है, बल्कि यह **जनसंख्या वितरण** और **संसाधन उपलब्धता** को भी प्रभावित करती है।

- **कुल क्षेत्रफल का 30 प्रतिशत भाग** भूमि है, जो हमारे ग्रह का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लेकिन यह प्रतिशत बहुत कम है, और **भूमि के सभी हिस्से** आवास योग्य या उपयोगी नहीं होते।
- भूमि का उपयोग केवल **खेती** या **आवास** के लिए नहीं किया जाता, बल्कि यह अन्य **प्राकृतिक संसाधनों** का स्रोत भी होती है जैसे- **खनिज** और **जल**।

- भारत भौगोलिक रूप से उत्तरी गोलार्द्ध में 8°4′-37°6′ उत्तरी अक्षांश और 68°7′-97°25′ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है।
- सम्पूर्ण भारत का अक्षांशीय विस्तार 6°4′-37°6′ उत्तरी अक्षांश के मध्य स्थित है।
- भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. है।
- क्षेत्रफल के आधार पर रूस, कनाडा, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद भारत विश्व का **7वाँ बड़ा देश** है।
- लगभग 30% भाग पर्वत व पहाड़ियों से, 27% भाग पठार तथा 43% भाग मैदानों से घिरा है, जो कृषि के लिए उपयुक्त है।

- भारत को धरातल तथा भौतिक रचना के स्वरूप के अनुसार **पाँच भागों** में बाँटा गया है:-
  1. हिमालय का पर्वतीय क्षेत्र।
  2. उत्तर का विशाल मैदान।
  3. प्रायद्वीपीय पठार।
  4. मरुस्थलीय क्षेत्र।
  5. तटीय मैदान व द्वीप समूह।

भूमि का वितरण और कारक

भूमि का वितरण असमान है, और इसका मुख्य कारण है **जलवायु**, **स्थलाकृति** और **प्राकृतिक परिस्थितियाँ**। यह कारक भूमि के **उपयोग** और **मनुष्य के रहने** के तरीके को प्रभावित करते हैं। कुछ मुख्य कारक इस प्रकार हैं:

- **ऊबड़-खाबड़ स्थलाकृति**: पर्वतों और अन्य ऊबड़-खाबड़ क्षेत्रों में **जमीन** पर कोई विशेष उपयोग नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह कृषि और आवास के लिए उपयुक्त नहीं होती है। इसके कारण ये क्षेत्र अक्सर **निर्जन** या **विरल बसा हुआ** होते हैं।
- **पर्वतों के तीव्र ढाल**: पर्वतीय क्षेत्रों में **खेतों के लिए उपयुक्त भूमि** की कमी होती है, क्योंकि इन स्थानों पर ढाल तीव्र होती है और वहां खेती करना कठिन होता है। इस कारण पर्वतीय क्षेत्र भी **निर्जन** रहते हैं।
- **जलाक्रांत संभावित निम्न क्षेत्र**: जलमग्न या निचले क्षेत्रों में **भूमि का उपयोग** करना कठिन हो सकता है, क्योंकि ये अक्सर **जलमग्न** होते हैं या दलदली होते हैं। इन क्षेत्रों में **खेतों की सिंचाई** के लिए चुनौतियाँ होती हैं, और ये क्षेत्र अक्सर **निर्जन** होते हैं।
- **मरुस्थल क्षेत्र**:मरुस्थल क्षेत्र, जैसे **रेगिस्तान**, जहां वर्षा की मात्रा अत्यधिक कम होती है, इन क्षेत्रों में भूमि का उपयोग सीमित होता है। यहां की भूमि कृषि के लिए उपयुक्त नहीं होती है, इसलिए ये स्थान अक्सर **विरल** या **निर्जन** होते हैं।

- **सघन वन क्षेत्र**: घने जंगलों के क्षेत्र में भूमि का उपयोग **कृषि** के लिए नहीं किया जा सकता, क्योंकि इन क्षेत्रों में वृक्षों का विशाल अस्तित्व होता है। यह भूमि आमतौर पर **प्राकृतिक संरक्षण** के लिए होती है और **विरल** या **निर्जन** होती है।

उर्वर मैदानों और नदी घाटियों की भूमि

- **उर्वर मैदानों** और **नदी घाटियों** में भूमि के उपयोग के अवसर अधिक होते हैं, क्योंकि ये भूमि कृषि के लिए अत्यधिक उपयुक्त होती हैं।
- **नदी घाटियाँ** और **उर्वर मैदान** अधिक **जलवायु अनुकूल** होते हैं, जिससे यह भूमि **खेतों और कृषि गतिविधियों** के लिए उपयुक्त हो जाती है। इसी कारण से ये स्थान **सघन बसी हुई** जनसंख्या वाले क्षेत्र होते हैं।
  उदाहरण के लिए, **गंगा-यमुना** की घाटियाँ और **सिंधु घाटी** जो कृषि के लिए अत्यधिक समृद्ध हैं, यह स्थान **वृद्धि और विकास** के केंद्र बने हुए हैं।

भूमि उपयोग

भूमि उपयोग का अर्थ है भूमि का विभिन्न कार्यों के लिए उपयोग करना, जैसे कि कृषि, वानिकी, खनन, सड़कों और उद्योगों की स्थापना। यह भूमि के उपयोग के विभिन्न तरीकों को दर्शाता है, जो **भौतिक** और **मानवीय** कारकों द्वारा निर्धारित होते हैं।

भूमि उपयोग के भौतिक और मानवीय निर्धारक

- **भौतिक कारक**:
  - ✓ **स्थलाकृति**: पर्वत, मैदान, रेगिस्तान आदि स्थलाकृति के प्रकार भूमि के उपयोग को प्रभावित करते हैं।
  - ✓ **मृदा**: मृदा की उर्वरता, प्रकार और संरचना भूमि के कृषि उपयोग को प्रभावित करती है।
  - ✓ **जलवायु**: तापमान, वर्षा और मौसम की स्थितियाँ भूमि उपयोग के लिए महत्वपूर्ण होती हैं।
  - ✓ **खनिज**: खनिज संसाधनों की उपलब्धता भूमि के उपयोग की दिशा तय करती है, जैसे खनन कार्य के लिए भूमि का उपयोग।
  - ✓ **जल की उपलब्धता**: जल स्रोतों की उपस्थिति कृषि, उद्योग और अन्य कार्यों के लिए भूमि के उपयोग को प्रभावित करती है।
- **मानवीय कारक**:
  - ✓ **जनसंख्या**: जनसंख्या का दबाव भूमि उपयोग में परिवर्तन करता है। जैसे अधिक जनसंख्या के कारण कृषि भूमि का शहरीकरण में रूपांतरण।
  - ✓ **प्रौद्योगिकी**: उन्नत तकनीकों के प्रयोग से भूमि के उपयोग के तरीकों में बदलाव आया है, जैसे जल संरक्षण, सिंचाई तकनीकें आदि।

भूमि उपयोग के तरीके

- **कृषि**:
  - ✓ कृषि भूमि का उपयोग मुख्यतः **खाद्य उत्पादन** और **कृषि उत्पाद** जैसे- **फल, सब्जियाँ**, **अनाज** और **फाइबर** के लिए किया जाता है।
  - ✓ यह भूमि उपयोग **नदी घाटियों** और **उर्वर मैदानों** में अधिक होता है, जहाँ जलवायु और मृदा अनुकूल होते हैं।
- **वानिकी (Forestry)**:
  - ✓ वन संसाधनों का उपयोग लकड़ी, रेजिन, औषधियाँ और अन्य वन उत्पाद प्राप्त करने के लिए किया जाता है।
  - ✓ इस भूमि उपयोग में **सघन वन** और **जंगली क्षेत्र** शामिल होते हैं।
- **खनन (Mining)**:
  - ✓ खनिज संसाधनों का **उत्खनन** करने के लिए भूमि का उपयोग किया जाता है, जैसे **कोयला, लौह अयस्क, और अन्य खनिज**।
  - ✓ यह क्षेत्र आमतौर पर **पहाड़ी क्षेत्रों** या **खनिज-समृद्ध** इलाकों में होते हैं।
- **सड़क और अवसंरचना**:भूमि का उपयोग **सड़क निर्माण**, **रेलवे लाइन**, **आधुनिक अवसंरचनाओं** (जैसे- **निर्माण क्षेत्र**, **औद्योगिक पार्क**, **शहरों का विस्तार**) के लिए किया जाता है।
- **औद्योगिकीकरण (Industrialization)**: औद्योगिक उपयोग के लिए भूमि का उपयोग, जैसे **फैक्ट्रीज़**, **वाणिज्यिक क्षेत्र**, और **विकसित क्षेत्रों** के निर्माण में किया जाता है।